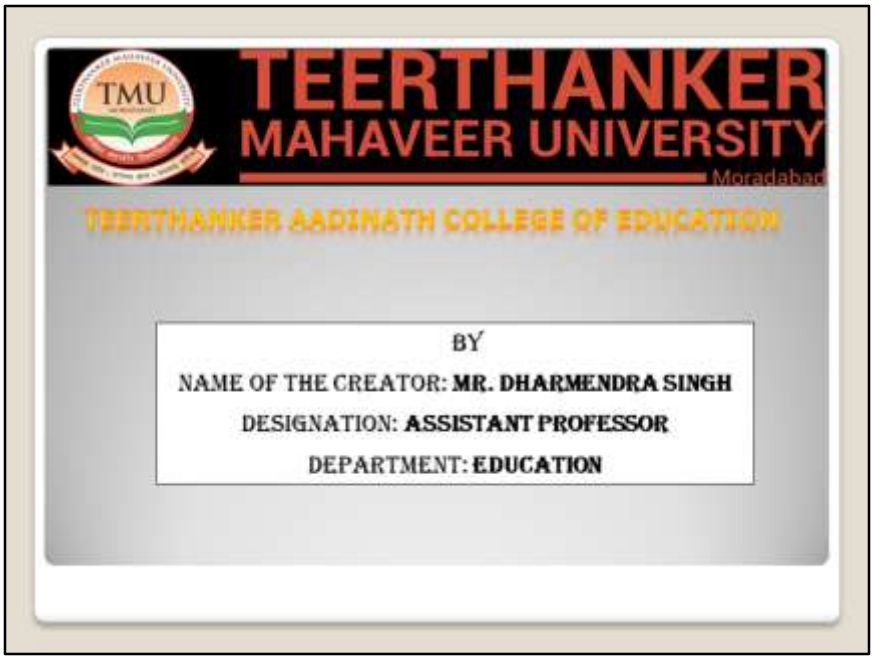

TEERTHANKER
MAHAVEER UNIVERSITY
Moradabad
TEERTHANKER AADINATH COLLEGE OF EDUCATION
BY
NAME OF THE CREATOR: MR. DHARMENDRA SINGH
DESIGNATION: ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT: EDUCATION

सम्प्रेषण

- सम्प्रेषण का अर्थ
- आवश्यकता एवं महत्व
- सम्प्रेषण के घटक या कारक
- सम्प्रेषण के प्रकार
- प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके

सम्प्रेषण का अर्थ **Meaning of Communication** सामान्यतः सन्देशों एवं विचारों के आदान-प्रदान हम पारस्परिक सम्प्रेषण कहते हैं। सम्प्रेषण का वास्तविक अर्थ होता है एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचनाओं एवं संदेशों को भेजना तथा प्राप्तकर्ता द्वारा उन्हें ठीक और सही अर्थ में समझना, जिस रूप और अर्थ में संप्रेषक चाहता है। सम्प्रेषण को आंग्ल भाषा में कम्यूनिकेशन कहा जाता है। इस आंग्ल भाषीय शब्द का निर्माण लैटिन शब्द कम्यूनी (Commune) से हुआ है। इसका आशय सामान्य विचारों भावनाओं, सूचनाओं के आदान-प्रदान से होता है। इस प्रकार सम्प्रेषण शब्द सम् और प्रेषण दो शब्दों में मिलकर बना है। सम का अर्थ है-भली प्रकार और प्रेषण का अर्थ है भेजना अर्थात् संदेश व सूचनाओं को भली प्रकार प्रेषित करना, जिससे सामने वाला उस संदेश को यथावत् भली प्रकार ग्रहण कर सके।

(परिभाषाएं पॉललीगन्स के अनुसार- सचार (सम्प्रेषण) वह क्रिया है, जिसके द्वारा दो या अधिक लोग विचारों तथ्यों भावनाओं एवं प्रभावी आदि का इस प्रकार विनियम करते हैं कि अर्थ, उद्देश्य तथा उपयोग को भली-भाँति समझ लेता है।" चार प्राप्त करने वाला व्यक्ति सन्देश के "Communication is the process by which two or more people exchange facts, ideas, feelings, impressions and the like in a manner that the receiver gains a clear understanding of the meaning internet and use of the message"

सम्प्रेषण या सवार एक प्रक्रिया है, जो कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य घटित होती है तथा इसके माध्यम से अभिवृत्तियों, इच्छाओं आदर्शों एवं सूचनाओ इत्यादि का आदान-प्रदान होता है। शिक्षण प्रक्रिया में संचार शब्द के लिए उपयुक्त शब्द सम्प्रेषण ही है। क्रय के अनुसार- "किसी वस्तु के विषय में समान या सहभागी ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रतीकों का उपयोग ही सम्प्रेषण है। यद्यपि मनुष्यों में सम्प्रेषण का महत्त्वपूर्ण माध्यम भाषा ही है, फिर भी अन्य प्रतीकों का प्रयोग किया जा सकता है।" डॉ० आई०पी० तिवारी- सम्प्रेषण जीवन की एक क्रिया है। इसके अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। सम्प्रेषण जीवन के साथ शुरू होता है और जीवन के अन्त के साथ खत्म हो जाता है। सामाजिक व्यवस्था में सम्प्रेषण की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।)

आवश्यकता एवं महत्व **Needs and importance** शिक्षण की समस्त प्रक्रिया विभिन्न प्रकार से ज्ञान, बोध एवं समझ विकसित करने के लिए की जाती है। अत ज्ञान की संरचना शिक्षण के स्रोत में एक महत्त्वपूर्ण संरचना है। इस प्रकार के शिक्षा प्रणाली में शिक्षक तथा छात्र दोनों ही सक्रिय रहकर अन्त प्रक्रिया करते है। इस प्रक्रिया में संचार माध्यमों की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षक के द्वारा पाठ की प्रस्तुतीकरण के समय प्रशिक्षुओं / बालकों के समक्ष पाठगत विषय उपस्थित किया जाता है। उद्देश्य कथन के समाप्त हो जाने के पश्चात् बालक का ध्यान नये पाठ पर किस प्रकार केन्द्रित हो ? नये ज्ञान से किस प्रकार परिचित कराया जाए ? यह समस्या शिक्षक के सम्मुख आती है। वास्तव में यह उत्सुकता बढ़ाने का काम शिक्षक ही भली प्रकार से करता है इसलिए इसे 'सम्प्रेषण कौशल कहा जाता है।

[अधिगम से सम्प्रेषण का सम्बन्ध किसी वातावरण के सीधे सम्पर्क से प्राणी अपने व्यवहारों में जो परिवर्तन लाता है, वही सीखना है। सीखना एक क्रियाशील प्रक्रिया है, उस पर चारों ओर के वातावरण का प्रभाव पड़ता रहता है। उसकी रूचि, झुकाव, निपुणता, योग्यता एवं शक्ति उचित सीखने की प्रक्रिया की उपज है। अच्छे सम्प्रेषण में अच्छे प्रश्नों का चयन कर उनसे पूछना चाहिए। शिक्षण की निपुणता किसी हद (सीमा) तक प्रश्नोत्तर पर आधारित होती है। प्रश्नों की सहायता से पाठ आगे बढ़ता है तथा बालकों को प्रेरित करके उनका ध्यान उनकी सहभागिता के कारण विषय वस्तु पर केन्द्रित करता है। प्रश्नों के द्वारा विषयवस्तु के प्रति बालकों की जिज्ञासा तथा रुचि जाग्रत होती है जिससे कि उसकी रुचि पाठ के प्रति बनी रहे।

[सम्प्रेषण का महत्त्व प्रेषण जीवनपर्यन्त सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसमे हमारी समस्त इन्द्रियाँ आँख कान, हाथ और शरीर के समस्त क्रियाशील रहते हैं। सम्प्रेषण शिक्षण का वह भाग है जिसमें शिक्षक के निर्देश प्रशिक्षुओं / शिक्षार्थी के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं। बालकों की रुचियो प्रवृत्तियों तथा भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के माध्यम से विषय के प्रति उनकी रुचि जिज्ञासा व ध्यान केन्द्रित करता है। सम्प्रेषण के द्वारा शिक्षण को रोचक एवं सरल बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी नामांकन की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विद्यालय में बच्चों के ठहराव की स्थिति को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है। यह तभी सम्भव है जब सम्प्रेषण की भाषा शुद्ध एवं स्पष्ट हो, स्वर स्थिर हो, प्रश्न सरल एवं स्पष्ट हो, सार्थक हो. सामायिक एवं कक्षा वातावरण के अनुकूल हो, अन्य आवश्यक परिस्थितियों को स्थान दिया गया हो तथा छात्र ध्यान केन्द्रित कर पाते हो क्योंकि एक सफल शिक्षण श्रेष्ठ सम्प्रेषण पर आधारित है, जिससे न केवल पाढ़ की रोचकता बढ़ेगी अपितु अधिगम का अनुपात भी बढ़ेगा।

[सम्प्रेषण का महत्त्व प्रेषण जीवनपर्यन्त सीखने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसमे हमारी समस्त इन्द्रियाँ आँख कान, हाथ और शरीर के समस्त क्रियाशील रहते हैं। सम्प्रेषण शिक्षण का वह भाग है जिसमें शिक्षक के निर्देश प्रशिक्षुओं / शिक्षार्थी के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं। बालकों की रुचियो प्रवृत्तियों तथा भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के माध्यम से विषय के प्रति उनकी रुचि जिज्ञासा व ध्यान केन्द्रित करता है। सम्प्रेषण के द्वारा शिक्षण को रोचक एवं सरल बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी नामांकन की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि एवं विद्यालय में बच्चों के ठहराव की स्थिति को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है। यह तभी सम्भव है जब सम्प्रेषण की भाषा शुद्ध एवं स्पष्ट हो, स्वर स्थिर हो, प्रश्न सरल एवं स्पष्ट हो, सार्थक हो. सामायिक एवं कक्षा वातावरण के अनुकूल हो, अन्य आवश्यक परिस्थितियों को स्थान दिया गया हो तथा छात्र ध्यान केन्द्रित कर पाते हो क्योंकि एक सफल शिक्षण श्रेष्ठ सम्प्रेषण पर आधारित है, जिससे न केवल पाढ़ की रोचकता बढ़ेगी अपितु अधिगम का अनुपात भी बढ़ेगा।

सम्प्रेषण के घटक या कारक

Factors of Communication

प्रेषक (Communicator)

संदेश (Message)

माध्यम (Media)

प्रापक (Achiever)

प्रतिक्रिया (Response)

प्रतिपुष्टि (Feed back)

[1. प्रेषक (Sender or Communicator) प्रेषक एवं माध्यम की सफलता का मूलाधार संदेश होता है। संदेश को सामाजिक विषमता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद एवं अन्य बुराइयों से आच्छादित नहीं होना चाहिए बल्कि इसके स्थान पर लोगों में प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, सह-अस्तित्व, शान्ति एवं आपसी सौहार्द को बढ़ाने वाला होना चाहिए।

2. संदेश **Messages** संदेश से आशय पाठ्यवस्तु से है। प्रेषक ग्राही को जो कुछ भी सिखाना चाहता है इस कार्य हेतु अपना जो अनुभव व ज्ञान वह शिक्षण के माध्यम से प्रेषित करता है उसे संदेश कहते हैं। यदि एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सूचना या जानकारी दी जाती है और दूसरा व्यक्ति समझ लेता है तो यह सम्प्रेषण कहलाता है। सम्प्रेषण पूरा होने के लिए सम्प्राप्ति की आवश्यक है अथवा किसी के द्वारा कही गई बात को उसी तरह समझ लेना सम्प्रेषण कहलाता है। उदाहरणार्थ- प्रेषक स्कूल, स्टेशन, स्थान आदि शब्दों को शुद्ध बोलना एवं लिखना सिखाना चाहता है। वह पहले स्वयं शुद्ध उच्चारण करके सिखायेगा।

4. ग्राही- **Achiever** ग्राही अर्थात ग्रहण करने वाले प्राप्त करने वाला सीखने वाला सम्प्रेषण के द्वारा दिये जाने वाले ज्ञान को ग्रहण करने वाला ग्राही कहलाता है। प्रेषण के तीन प्रमुख घटक है का ही आपस में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। संप्रेषक संदेश संदेश, ग्राही। तीनों ग्राही प्रतिपुष्टि। इसका तात्पर्य है कि संप्रेषक अर्थात् शिक्षक ने विद्यार्थियों को (ग्राही को) जिस किसी भी विषय की महत्वपूर्ण बातों की जानकारी दी उसको ग्राही (विद्यार्थी) ने कितना सीखा, उसे कितनी उपलब्धि हुई। इसको संप्रेषक बीच-बीच में विद्यार्थियों की सहभागिता हुई। इसको संप्रेषक बीच-बीच में विद्यार्थियों की सहभागिता से जान लेता है कि वह सीख व समझ रहा है कि नहीं। यदि वह सामूहिक रूप से कम सीख रहा है या उसकी सिखने की उपलब्धि कम हो रही है तब ऐसी स्थिति में संप्रेषक व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर उसकी इस कमी को दूर करता है बालक को कौन सा विषय किस विधि से पढ़ाया जाना चाहिए, उसकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करता है। ग्राही को अन्य नामों जैसे प्रापक, प्राप्तकर्ता, ग्रहणकर्ता विषयी इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है।

5. प्रतिपुष्टि **Feed Back** जिस प्रकार अधिगम की प्रक्रिया में सीखने वाला व्यक्ति को सीखने की ओर उत्सुक करने के लिए बीच-बीच में पुनर्बलन या पृष्ठपोषण दिया जाता है, जिससे सीखने मे तारतम्यता, क्रमबद्धता एवं ध्यान की एकाग्रता बनी रहे, उसी प्रकार सम्प्रेषण की प्रक्रिया में भी प्रापक को समय-समय पर प्रतिपुष्टि देना आवश्यक होता है जिससे वह संदेश के प्रति जागरूक रहता है। प्रतिपुष्टि से प्रापक में नये जोश का संचार होता है और वह प्राप्त संदेश को वह करके देखने एवं उनकी व्यावहारिकता की ओर वह प्रेरित होता है। उसकी ज्ञानात्मक एवं भावात्मक विचार धाराएं क्रियात्मकता की ओर अग्रसर होती है।

सम्प्रेषण के प्रकार **Kinds of Communication** वर्तमान युग में सम्प्रेषण में प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाने लगा है, ताकि कक्षा में प्रजातान्त्रिक वातावरण सृजित हो सके। आध्यापक का सभी बालकों के साथ समान व्यवहार रहे. चाहे वह निम्न या उच्च वर्ग का हो या किसी जाति अथवा लिंग का हो। कक्षा में उचित वातावरण बनाया जाना चाहिए और छात्र एवं अध्यापक दोनो सक्रिय रहने चाहिए क्योंकि सम्प्रेषण के साथ सीखना भी जरूरी है अन्यथा सम्प्रेषण व्यर्थ है। कक्षा में कोई बालक किसी विषय में अधिक सफल होता है तो किसी में असफल। इन्ही कठिनाइयों को दूर करने के लिए सम्प्रेषण के वैयक्तिक एवं सामूहिक सम्प्रेषण को जानना आवश्यक है। सम्प्रेषण (प्रकार) लिखित (विभिन्न तथ्यों का लिखित रूप में सम्प्रेषण) आँख एवं मुख मुद्रा से सम्प्रेषण शाब्दिक सम्प्रेषण अशाब्दिक सम्प्रेषण मौखिक (वार्ता, व्याख्या कहानी, प्रश्नोत्तर मौखिक बोलकर सम्प्रेषण) वाणी या सम्प्रेषण वैयक्तिक सम्प्रेषण **Individual Communication** उपा स्पर्श या छूकर विभिन्न तथ्यों का सम्प्रेषण

वैयक्तिक सम्प्रेषण **Individual Communication** जब शिक्षक प्रत्येक चालक को अलग-अलग शिक्षण देता है तो इसे वैयक्तिक सम्प्रेषण कहा जाता है ए०जी० मेलबिन न वैयक्तिक सम्प्रेषण की परिभाषा इस प्रकार दी है विचारों का आदान-प्रदान अथवा व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा बालकों को अध्ययन में सहायता, आदेश तथा निर्देश प्रदान करने के लिए शिक्षक का प्रत्येक बालक से पृथक-पृथक साक्षात्कार करना।

सामूहिक सम्प्रेषण **Collective Communication** सामूहिक सम्प्रेषण का अर्थ कक्षा शिक्षण है। विद्यालय में एक सी मानसिक योग्यता वाले छात्रों के अनेक उपसमूह बना लिए जाते हैं। साधारणतया इनको कक्षा कहते हैं। ये कक्षाएँ सामूहिक इकाइयाँ होती है। शिक्षक इन कक्षाओं में जाकर सभी छात्रों को एक साथ शिक्षा देते हैं। इस विधि में एक कक्षा के सभी छात्रों के लिए सामूहिक शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

धन्यवाद